## 125 Years of Sardar School Jodhpur

Education helps people to think, feel and behave in a way that contributes to their success, and improves not only their personal satisfaction but also their community. In addition, education develops human personality, thoughts, dealing with others and prepares people for life experiences.

The idea of developing Sardar School was conceived with great vision of developing bright young minds, illuminated with the quality education and mission of serving the society. The school was established by Oswal Samaj on August 28, 1896 with the gracious hands of his highness Maharaja Shri Sir Pratap Singh, as a modest academic initiative. The school had then evolved, progressed, grown and developed step by step, harmonizing with the changing needs of time and society. It had planted, nourished and strengthened the quality education across the generations of the students by widening their horizons to carve a niche for themselves and creating frontiers in various professional arenas.

Moving towards the path of progress, the school was operated in the present Municipal Corporation office at Sojati Gate. In view of education and student numbers, Maharaja of Jodhpur, his highness Shri Ummed Singh alloted a piece of land at Jalori gate and laid the foundation stone of the school building on 13th September, 1932. Mahaveer complex, which is well embellished with modernized sports facilities for the students, is located at the nearest vicinity of the school. Sardar Sports Academy offers a variety of sports facility for 22 games, which is one of the unique features in Rajasthan.

In modern times, the school has a cutting edge technology platform for the students and offers the latest educational technologies in the form of smart classrooms equipped with interactive boards and facilities for video conferencing, Wi-Fi enabled computer labs, a digital language laboratory which aims at enhancing student communication skills , a digital library with more than 18000 books online, in addition to a regular school library.

A modern Digital Maths Lab helps to make learning, verifying and visualizing mathematical concepts in an enjoyable way. Abacus and Vedic Maths teachings, aim to make concepts of Mathematics easy and enable students to achieve a high standard of mental arithmetic. The Robotics lab provide a unique opportunity to the students to learn the advanced technical creativity by exploring and experimenting. Digital Language Lab has been designed to build articulation, oratory and presentation skills in the students.

The alumni of the school includes eminent and renowned Judges, Lawyers, Academicians, Chartered Accountants, Industrialists, Doctors, Engineers and highly successful professionals, who have achieved pinnacle of success and brought accolade to the school and the society The teachers of the school always strive to develop the ethical and moral code among the students.

On 1st Feburary 1996, the centenary year ceremony of Sardar School was graced by then President of India, Shri Shankar Dayal Sharma, and the ceremony was presided by the then Chief Minister of Rajasthan, Shri Bheru Singh Ji Shekhawat, besides then Governor of Rajasthan Mr. Baliram Bhagat who graced the occasion as the Guest of Honour.

In 2017, the school was renamed as Sardar Doon Public School and has become an epitome in the educational society of Jodhpur for quality education and state of the art teaching tools and methodology.

Sardar School has been nurturing its legacy of 125 years by providing quality education to the students and creating a force of ethical, informed and skilled citizens for New India. The impeccable contribution of the members of Oswal Singh Sabha and Oswal Education Committee has always been praiseworthy to uplift the dignity and pride of the school, and the priceless efforts of teachers and students are equally invested.

Department of Posts is delighted to issue Commemorative Postage Stamp on 125 Years of Sardar School, Jodhpur and appreciates its contribution in providing high quality education to students and igniting minds.

**Credits:**

| | | |
|---|---|---|
| Stamp/FDC/Brochure | : | Ms. Gulistaan |
| Cancellation Cachet | : | Mrs. Nenu Gupta |
| Text | : | Referenced from the contents provided by the proponent. |



# सरदार स्कूल, जोधपुर की स्थापना के 125 वर्ष

शिक्षा, व्यक्ति को सोचने, समझने, महसूस करने और अपना आचार–व्यवहार इस प्रकार से विकसित करने में मदद करती है कि वह, न केवल व्यक्ति विशेष को सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंचाती है और आत्म संतुष्टि के भाव से भरती है बल्कि उनको समुदाय की बेहतरी का भी कारक बनाती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व और उसकी विचारधारा और अन्य लोगों के प्रति उसके व्यवहार में निखार लाती है और उसे जीवन के विविध अनुभवों के लिए भी तैयार करती है।

सरदार स्कूल की स्थापना की संकल्पना, युवा मेधावी छात्रों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार करने के उद्देश्य से की गई, जिन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर समाज–सेवा के मिशन के लिए तैयार किया जा सके। इस स्कूल की स्थापना, ओसवाल समाज द्वारा महराजा श्री सरप्रताप सिंह के कर कमलों द्वारा, एक छोटे से शिक्षण संस्थान के रूप में 28 अगस्त, 1896 को की गई। तब से इस स्कूल ने, बदलते समय एवं समाज की जरूरतों के अनुरूप तालमेल बिठाते हुए कदम– दर–कदम प्रगति, वृद्धि और विकास की राह तय की है। इस स्कूल ने छात्रों की अनेक पीढ़ियों में उत्कृष्ट शिक्षा के बीज बोए और उन्हें एक मजबूत आधार देते हुए विराट दृष्टिकोण दिया, ताकि आगे चलकर ये छात्र अपने पंख फैलाकर अपने लिए एक विशिष्ट स्थान बना सकें और विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में अपनी कामयाबी का परचम लहरा सकें।

समय के साथ–साथ प्रगति पथ पर अग्रसर यह स्कूल सोजती गेट स्थित नगर निगम के मौजूदा कार्यालय परिसर में संचालित किया जाने लगा। तत्पश्चात् शिक्षा और विद्यार्थियों की संख्या को देखते हुए जोधपुर के महाराजा श्री उम्मेद सिंह द्वारा इस स्कूल के लिए जालौरी गेट पर भूखंड आबंटित किया गया। 13 सितम्बर 1932 को महाराजा उम्मेद सिंह द्वारा इस नए भवन की नींव रखी गई। छात्रों के लिए खेलों की आधुनिक सुविधा से युक्त महावीर कॉम्प्लेकस, इस स्कूल के निकट ही स्थित है। सरदार स्पोर्टस अकादमी 22 अत्याधुनिक खेलों की बेहतरीन सुविधा प्रदान करती है, जोकि राजस्थान की अनूठी विशेषताओं में से एक है।

आधुनिक समय में यह स्कूल, छात्रों को अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी मंच उपलब्ध करा रहा है तथा इंटरेक्टिव बोर्ड, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की सुविधा, वाई–फाई की सुविधायुक्त कंप्यूटर लैब के साथ–साथ डिजिटल भाषा प्रयोगशाला जैसी नवीनतम शैक्षणिक प्रौद्योगिकी की सुविधा भी प्रदान करता है, जिसका उद्देश्य छात्रों के संवाद कौशल में निखार लाना है। इसके अतिरिक्त, इस स्कूल में एक सामान्य पुस्तकालय के अतिरिक्त डिजिटल पुस्तकालय की सुविधा भी उपलब्ध है, जिसमें 18000 से अधिक पुस्तकें ऑनलाइन रूप से उपलब्ध हैं।

आधुनिक डिजिटल गणित प्रयोगशाला, गणित के सिद्धांतों को रुचिकर तरीके से सीखने, समझने और विजुएलाइज करने में मदद करती है। एबेकस और वैदिक गणित की शिक्षा, गणित के सिद्धांतों को आसान बनाती है और छात्रों में अंक गणित मौखिक रूप से करने की क्षमता (मेंटल अर्थमेटिक स्किल) का विस्तार करती है। स्कूल की रोबोटिक्स लैब, छात्रों को नई–नई खोज एवं प्रयोग के माध्यम से उन्नत तकनीकी क्रिएटिविटी, सीखने का विशिष्ट अवसर देती है। डिजिटल भाषा प्रयोगशाला (लैंग्वेज लैब) को इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि यह विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति, वाक कौशल और प्रेजेंटेशन स्किलस को निखारती है।

इस स्कूल के पूर्व छात्रों की सूची में कई प्रख्यात एवं जाने–माने व्यक्तित्व जैसे न्यायाधीश, वकील, शिक्षाविद्, चार्टर्ड अकाउंटेंट, उद्योगपति, डॉक्टर, इंजीनियर और अनेक अत्यंत सफल व्यवसायी आदि शामिल हैं, जिन्होंने कामयाबी की बुलंदियों को छुआ है और स्कूल एवं समाज का नाम रोशन किया है। इस स्कूल के अध्यापक, छात्रों में नैतिकता एवं सदाचार की भावना विकसित करने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं।

1 फरवरी 1996 को सरदार स्कूल की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित समारोह में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति, श्री शंकर दयाल शर्मा भी पधारे थे। इस समारोह की अध्यक्षता राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री, श्री भैरों सिंह शेखावत द्वारा की गई थी। इस अवसर पर राजस्थान के राज्यपाल श्री बलीराम भगत भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

2017 में इस स्कूल का नाम बदलकर सरदार दून पब्लिक स्कूल कर दिया गया। आज यह स्कूल, उच्च कोटि की शिक्षा तथा अत्याधुनिक शिक्षण उपकरणों एवं प्रणालियों के फलस्वरूप जोधपुर के शैक्षणिक जगत में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर चुका है।

सरदार स्कूल, 125 वर्ष पुरानी अपनी विरासत को संजोते हुए छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर, नए भारत के नैतिक, जानकार एवं कुशल नागरिक तैयार कर रहा है। स्कूल के सम्मान और गौरव को बनाए रखने में ओसवाल सिंह सभा और ओसवाल शिक्षा समिति के सदस्यों का अमूल्य योगदान प्रशंसनीय रहा है। साथ ही, इस पवित्र अनुष्ठान में यहां के अध्यापकों एवं छात्रों का योगदान भी उतना ही सराहनीय है।

डाक विभाग, छात्रों को उच्च कोटि की शिक्षा प्रदान करने तथा उनमें सीखने की ललक पैदा करने की दिशा में सरदार स्कूल के योगदान के महत्व को रेखांकित करते हुए 'सरदार स्कूल जोधपुर' की स्थापना के 125 वर्ष' विषय पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।


## आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका : सुश्री गुलिस्ताँ

विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर।


# तकनीकी आंकड़े

## TECHNICAL DATA

| | |
|---|---|
| मूल्य | : 500 पैसे |
| Denomination | : 500 p |
| मुद्रित डाक–टिकटें | : 303600 |
| Stamps Printed | : 303600 |
| मुद्रण प्रक्रिया | : वेट ऑफसेट |
| Printing Process | : Wet Offset |
| मुद्रक | : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद |
| Printer | : Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html


© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.


मूल्य ₹ 5.00